इन्टरव्यू-११

प्रः आपका नाम क्या है ?
जः मेरा नाम खुर्शीद है।

प्रः आपकी उम्र कितनी है ?
जः मेरी उम्र 20 साल है।

प्रः आप कितने साल के थे जब इस काम में लगे ?
जः हम 14 साल के थे।

प्रः आपके ये बाप-दादा के समय से काम होता था ?
जः हां, येस।

प्रः आप कहीं से आकर बजरडीहा में बसे हैं ?

ज: हां खेड़ी तलाब से।

प्र: वहाँ से यहाँ क्यों आए ?
ज: वहाँ रहने की दिक्कत थी।

प्र: वहाँ से यहाँ आपका करघा घटा की बढ़ा ?
ज: बढ़ा।

प्र: कितना करघा है अभी आपके पास ?
ज: इस समय छठो है हमारे पास।

प्र: पहले कितना करघा था ?
ज: तीन था भाड़े पर था वहाँ पर।

प्र: कितने घर के लोग लगे हैं कितने मजदूर हैं ?
ज: सभी घर के हैं हम और हमारा भाई के अलावा चार कारीगर है बाहर के।

प्र: मतलब मजदूरी पे ?
ज: हाँ।

प्र: एक महीने में कितनी साड़ी हो जाती है ?
ज: कम से कम पाँच साड़ी हो जाती है।

प्र: आमदनी कितनी होती होगी ?
ज: पन्द्रह सौ रुपया।

प्र: पाँच साड़ी के पन्द्रह सौ रुपया केवल ?
ज: नहीं मजदूरी केवल बिकती है तो पूरी लागत जोड़ के ना बिकती है। ये तो केवल मजूरी है। एक साड़ी की तीन सौ रुपया मजूरी होती है।

प्र: ये सब कतान लेते है वो गृहस्था से या बाजार से खुद लाते हैं ?
ज: खुद लातें हैं बाजार से।

प्र: आप बुनकर हैं कि गृहस्था ?
ज: रूकावट
ये बुनकर है गृहस्था से लेते हैं
शुरू

प्र: साड़ी बनाने का सारा सामान गृहस्था से लेते हैं ?
ज: हां।

प्र: सारी चीजे खरीदने के बाद एक साड़ी पर कितनी लागत आती है ?
ज: वहीं करीब चौदह-पन्द्रह सौ रुपये के लगभग, जैसी साड़ी हो जैसे जरी की हो तो और मंहगी पड़ जाती है दो से ढाई हजार पड़ जाती है, रेशम की हो तो बारह सौ पन्द्रह सौ रुपया पड़ जाती है।

प्र: इसमें रेशम, जरी, मजदूरी सब मिलाकर ?
ज: सब मिलाकर।

प्र: एक साड़ी बिन कितने दिन में जाती है ?
ज: पांच रोज में छह रोज में।

प्र: एक साड़ी की लागत निकालकर कितनी मजूरी होती है ?
ज: दो सौ रुपया। पन्द्रह सौ रुपया की साड़ी पर 150 से 200 रुपये फायदा होता है। इससे ज्यादा नहीं।

प्र: तो जितने करघे है उन सब से बनी साड़ियों की लागत निकाल कर महिने में कितनी आमदनी होती होगी ?
ज: अरे समझ लिजिए कि पांच साड़ी एक कारीगर बिनता है उससे 5 से 6 हजार रुपया महिना पड़ता है। उसमें बत्ती का महीना देना होता है।

प्र: कितना देना होता है ?
ज: बिल तो बहुत ज्यादे आती है मैडम कोई ठीक नहीं है। दस हजार तक का बिल आता है यहाँ। बहुत परेशानी होती है बिल का।
रूकावट
अभी देखो लाइन नहीं है।
शुरू
लाइन नहीं है आधा काम वैसे ही बंद हो जाता है। नली यदि बाहर भराते है तो उसका अलग पैसा देना होता है।

प्र: ज्यादातर घरों में तो घर में ही नली भरी जाती है तो क्या आप बाहर भराते हैं ?
ज: नहीं, घर में भरता हैबाहर भी भरता है। जैसे छह कारखाने का एक आदमी तो भर नहीं पायेगा। तो दिक्कत होगी। नहीं भर पाने पर काम का नुकसान होगा। कारीगर बैठा रहेगा।

प्र: करघा जब आपका बढ़ा तो क्या कर्ज या लोन वगैरह लेना पड़ा ?
ज: नहीं, अपनी कमाई से खरीदा।

प्र: कभी कर्ज नहीं लिया ?
ज: नहीं।

प्र: बैंक से भी नहीं लिया ?
ज: नहीं।

प्र: आराम से खर्च चल रहा है ?

ज: जी हाँ।

प्र: तो आपकी नज़र में पहले से स्थिति में सुधार हुआ है स्थिति बिगड़ी है ?
ज: पहले से स्थिति तो कारोबार की खराब हो गई है। पहले अच्छी थी इस समय तो मॉर्केट बहुत डाउन है। साड़ी बिकती नही बिकती है तो पैसा नहीं मिलता।

प्र: क्यों क्या कारण है ?
ज: उसका कारण यही लगता है कि सरकार एक्सर्पोट बंद कर दी है पहले एक्सर्पोट चालू था तो माल आराम से निकल जाता था। जब से ये बंद हो गया माल बिकना बंद हो गया।
ये जब से भाजपा सरकार बैठी है ना तब से बनारसी का धंधा और चौपट हो गया है।

प्र: इनकी सरकारी नीति में कोई परिवर्तन आया है कि वो जो जानबूझ कर रही है मुस्लमानों के साथ ?
ज: हमको लगता है वो जान बूझकर करते है। वैसे इसमें तो सभी बिरादर लगे हुए है पहले मुस्लमान करते थे अब तो सब करते हैं।

प्र: तो सरकार की नीति में कोई अंतर आया है ?
ज: हां उसकी कोई नीति होगी तभी ना कि मुस्लमानों को पीछे किया जाए।

प्र: एकर्स्पोट के बारे में आप क्या बता रहे थे, कहां एकर्स्पोट किया जाता था ?
ज: विदेशों में किया जाता था। देश विदेश सब जगह साड़ी जाती थी वो सब रास्ता बंद कर दिया है।

प्र: अभी ये बंद है ?
ज: हां कई सालों से बंद है
रूकावट
किसी जमाने से बंद है, जब से ये सरकार बनी है तभी से बंद हो गया, कभी बीच में खुलता है कभी बंद हो जाता है। तीन साल हो गया। हम लोग बहुत तंगी से गुजर रहे हैं।

प्र: रेशम के दाम में अंतर आया है क्या ?
ज: जी हां रेशम सस्ता हो गया और साड़ी का दाम घट गई साड़ी की। जो पन्द्रह सौ की बेचते थे उसमें 150-200 घट गया।

प्र: उससे आपको घाटा हुआ ?
ज: हां
रूकावट
हां, अगर सौ रुपया का रेशम का लागत घटा तो हमारा 150 रुपया का घाटा हुआ। एक का दाम घटा कर दूसरे का बढ़ा देता है तो हमारा ही हुआ ना।

प्र: इस बढ़ने ये घटने से आपका क्या घाटा या नुकसान है ?
ज: हम लोगों का नुकसान है इसलिए की व्यापारी लोग बढ़ाते नहीं है।

प्रः रेशम अगर सस्ता होता हो तो क्या फिर भी वो लोग दाम उतना ही रखते ?
जः हां उतना ही रखते हैं। और घटा देते हैं। बढ़ाते नहीं है। अब साड़ी जहां देते है, अगर इसका दाम बढ़ भी जाये तो व्यापारी बढ़ा के नहीं देते हैं। हमारा नुकसान ही नुकसान है। हम लोगों का हर तरफ से नुकसान है।

प्रः आपके खिलाफ जो व्यापारी या गद्दीदार लोग करते हैं उसके खिलाफ आप लोग कोई समिति या संगठन बनाने का नहीं सोचते ?
जः संगठन तो बनता है मगर सुनवाई नही होती। आदमी वैसे ही परेशान है 15-20 दिन बैठ जायेगा तो खायेगा क्या। रोज जो आदमी कमाने जाने वाला है फिर वो अगर रोज हड़ताल करेगा बंद करेगा तो जाएगा कमाएगा कहां से।

प्रः बात तो सही है पर धीरे-धीरे यही सोच कर स्थिति तो और खराब होती जायेगी ?
जः खराब तो होती ही जा रही है। कोई त्योहार हम लोग कायदे से मना नहीं पाते। धंधा चौपट हो रहा है।
रूकावट
अब ये सर्वे में आपको जो मिलेगा वो पूरी तरीके से दुकान पर नहीं बता पाएंगे। बहुत से लोग घबराते हैं बताने से भी कि पता नहीं कौन सी बात है क्या है अपनी आमदनी बताने में घबराएंगे। कुछ नहीं आप से बात करेंगे।

प्रः ये बताइए जैसे आपके पिताने अपनी मेहनत से करघे बढ़ाए, ज़मीन ली और अब क्या आपकी ऐसी स्थिति है कि आप करघे बढ़ा सकें और भी जमीन या संपत्ति बना सकें ?
जः जी नहीं ऐसी स्थिति नहीं है कारोबार चौपट हो गया है कि अब तो जो बाहर बिनाता था वो कारखाना बंद हो गया है हमारे पिता जी दस ठो बाहर बिनवाते थे वो बंद हो गया मंदा इतना आ गया है। पैसा मिलता नहीं है। साड़ी बिकती नहीं है अगर बिक भी जाती है तो पैसा नहीं मिलता समय से। समय से यदि पैसा नहीं मिलेगा तो जहां से हम तानी लाते है वो पैसा मांगेगा तो कहां से देगा। नहीं देंग तो वो चार आदमी के सामने बोलेगा। सब देखना रहता है इसलिए धंधा बंद कर देना पड़ा।

प्रः साड़ी मार्केट में खुद बेचते हैं या देते हैं बेचने के लिए ?
जः गद्दी पर देते हैं, घुमकर नहीं बेचते ये सब साड़ी ना घुमकर नहीं बिकती है ?
रूकावट
खुद कोई नहीं बेचता गद्दी पर बेचा जाता है जहां से ग्राहक ले जाता है। सरकार यदि पावरलूम बंद करा दे ना तो फिर से हमारा धंधा चालू हो जायेगा।
रूकावट
यही हम बना रहे हैं पन्द्रह सौ का और यही कपड़ा पावरलूम पर बनेगा पांच सौ रुपया का। हजार रुपये का फर्क तो ऐसे ही पड़ गया तो कौन लेगा। आप ही बताइए की यदि यही कपड़ा दो सौ में मिले तो आप पांच सौ का क्यो लेगी।

प्रः पावरलूम आने के बाद भी गृहस्था लोग अमीर होते जा रहे हैं ?
जः हाँ।

प्रः लूम के आधार पर ही हो रहे हैं ?
जः हां लूम के आधार पर ही ये अमीर बन रहे हैं।

प्रः तो मुख्य कारण क्या है ?

ज: पावर लुम तो हइहे है, वो सस्ते में देते हैं।